रमेश कुमार यादव
हिन्दी-विभाग
डी॰ के॰ कालिज, डुमरॉव, बक्सर

भाषाविज्ञान के अंग

भाषा कहने से सामान्य: चार तत्वों का बोध होता है- ध्वनि, शब्द (पद), वाक्य और अर्थ। पहले ध्वनि का उच्चारण होता है; फिर अनेक ध्वनियों से एक पद का निर्माण होता है; अनेक पदों से वाक्य संघटित होता है और उससे अर्थ की प्रतीति होती है। ध्वनि से अर्थ तक का क्रम अनवरत चलता रहता है। इनमें प्रत्येक की सीमा इतनी विस्तृत और व्यापक हो गयी है कि इनके विवेचन के लिए स्वतंत्र शास्त्र विकसित हो गये हैं जिन्हें क्रमश: ध्वनि-विज्ञान, पदविज्ञान, वाक्यविज्ञान एवं अर्थविज्ञान कहते हैं।

(1) ध्वनिविज्ञान-

ध्वनि क्या है? कैसे, कहाँ से उत्पन्न होती है? उसका कैसे सम्प्रेषण होता है? एक ध्वनि से दूसरी ध्वनि का भेद क्यों और कैसे होता है? ध्वनि के उच्चारण में किन अवयवों की सहायता ली जाती है? ध्वनि में लंबता या मन्द्रता क्यों आती है? उच्चारण के क्रम में कोई एक ध्वनि दूसरी को किस प्रकार प्रभावित करती है? आदि विषयों का निरुपण ध्वनि विज्ञान में किया जाता है।

(2) पदविज्ञान -

शब्द क्या है? शब्द कैसे निष्पन्न होता है? शब्द- निष्पत्ति में उपसर्ग, प्रकृति और प्रत्यय का क्या आपेक्षिक उपयोग है? संज्ञा, क्रिया, विशेषण, अव्यय आदि का विभाजन किस आधार पर होता है? लिंग, वचन, पुरुष, काल आदि तत्व क्या हैं? शब्द और पद का अन्तर क्या है? आदि बातों का विचार पदविज्ञान के अन्तर्गत होता है।

(3) वाक्य विज्ञान -

पदों का अन्वय कैसे होता है? अन्वय के साधन या आधार क्या हैं? क्यों मैं जाता हूँ नहीं हो सकता 'मैं जाता हूँ' ही होना चाहिए? वाक्य के कितने भेद हैं? ये वाक्य विज्ञान के विषय हैं।

(4) अर्थ विज्ञान -

अर्थ क्या है? अर्थ क्यों बदल जाता है? शब्द की व्युत्पत्ति क्या है? शब्द के अर्थों का निर्धारण कैसे बदल जाता है? एक ही भद्र शब्द से 'भद्दा' और 'भला' दो शब्द विकसित हुए हैं, पर दोनों के अर्थ अलग-अलग हैं। 'वत्स' से 'बच्चा' शब्द भी निकला है और 'बछड़ा' भी, पर एक का प्रयोग मनुष्य के लिए होता है और दूसरे का पशु के लिए। यह बताना अर्थ विज्ञान का काम है।

(5) कोशविज्ञान -

कोश-निर्माण की क्या प्रक्रिया है? शब्द की व्युत्पत्ति क्या है? शब्द के अर्थों का निर्धारण कैसे होता है? शब्दों को कोश में किस क्रम से रखना चाहिए? - ये बातें भाषाविज्ञान से ही सम्बद्ध हैं। इसलिए कोशविज्ञान भाषाविज्ञान का ही अंग माना जाता है। व्युत्पत्ति का विचार अलग से भी हो सकता है जिसके लिए हमारे यहाँ निरुक्त शब्द का प्रयोग होता था और अंग्रेजी में 'एटिमॉलोजी' का होता है। आज निरुक्त भी कोशविज्ञान के अन्तर्गत है।

(6) भाषिक भूगोल -

भाषिक भूगोल भाषाविज्ञान के क्षेत्र-विस्तार की एक नयी दिशा है जिसमें भाषा-सम्बन्धी सीमाओं का विचार और निर्धारण किया जाता है। कोई भाषा कहाँ तक बोली जाती है? उसके वैभाषिक रूप क्या हैं एवं कहाँ प्रयुक्त होते हैं? एक भाषा से दूसरी भाषा की सीमाएँ जब मिलती हैं तो वे कैसे एक दूसरे को प्रभावित करती हैं? सीमा-प्रदेश की भाषा को किस भाषा के अन्तर्गत माना जाये? आदि प्रश्न भाषिक भूगोल के द्वारा निर्णीत होते हैं।

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट- प्रोफेसर
हिन्दी- विभाग
डी. के. कालेज, डुमराँव बक्सर